بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुतबा जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 15 नवम्बर 2024, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.

सुलह-ए-हुदैबियः
के परिपेक्ष में सीरत-ए-नबवी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का बयान

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 15.11.24

محلہ احمدیہ قادیان-پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशह्हुद तअववुज़ तथा सूरः फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आज सुलह-ए-हुदैबियः (मुसलमानों और काफ़िरों के बीच होने वाली सन्धि जिसे क़ुरआन ने मोमिनों की विजय फ़रमाया) के हवाले से वर्णन आरम्भ करूंगा। सुलह-ए-हुदैबियः ज़िलक़ादा 6 हिजरी अर्थात मार्च 628 ईसवी को हुई, इसको गज़वा-ए-हुदैबियः भी कहा जाता है। गज़वा-ए-हुदैबियः के विषय में अल्लाह तआला ने पूरी सूरः, सूरः अलफ़तह नाज़िल फरमाई। इस सूरत की आरम्भिक मुबारक आयतों में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि निःसन्देह हमने तुम्हें खुली खुली विजय प्रदान की है। ताकि अल्लाह तुझे तेरी हर एक अतीत में एवं भविष्य में होने वाली भूल चूक को क्षमा कर दे तथा तुझ पर अपनी अनुकम्पा को उच्चतम स्तर तक पहुंचाए और तुझे सिरात-ए-मुस्तक़ीम पर चलाता रहे और अल्लाह तेरी वह सहायता करे जो सम्मान एवं ग़लबः वाली सहायता हो। हुदैबियः एक कुँए का नाम था जो इस्लाम के आरम्भिक युग में यात्रियों तथा हाजियों के काम आता था,

परन्तु यहाँ कोई आबादी नहीं थी। यह स्थान मक्का से एक मरहले अर्थात नौ मील की दूरी पर स्थित है। हुदैबिया हरम-ए-मक्का की पश्चमी सीमा है।

रिवायतों तथा इतिहास से पता चलता है कि आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक सपने के आधार पर हुदैबियः की ओर यात्रा पर जाने का निर्णय लिया था। आप स. को सपने में दिखाया गया कि आप स. अपने सहाबियों के संग अमन की हालत में, अपने सिरों को मुंडवाते हुए और बालों को कतरवाते हुए मक्का में दाख़िल हुए हैं और उसकी चाबी ले ली है तथा अरफ़ात के मैदान में ठहरने वालों के साथ पड़ाव किया। इस सपने के आधार पर आप स. ने अरब के निवासियों तथा आस पास के कबीले के लोगों को बुलाया ताकि वे भी आप स. के साथ निकलें। इस यात्रा में मुसलमानों के पास नयामों में बंद तलवारों के अतिरिक्त कोई हथियार न था। तलवार उस ज़माने में घर से निकलते हुए हर व्यक्ति अपने पास रखा करता था और यह ज़रूरी न था कि जिसके पास तलवार है वह अवश्य लड़ाई करेगा। हज़रत उमर रज़ियाल्लाहु तआला अन्हु ने हथियार साथ न रखने के बारे में पूछा तो आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क्यूंकि मैं उमरा करने की इच्छा से जा रहा हूँ इस लिए मैं नहीं चाहता कि हथियार अपने साथ रखूँ।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस सपने का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि आप स. ने इस सपने को देखने के बाद अपने सहाबियों रज़ी. को प्रेरणा दी कि वे उमरे पर जाने की तय्यारी कर लें।

उमरा मानो एक प्रकार का छोटा हज था जिसमें हज के कुछ तरीकों को छोड़ कर बैतुल्लाह की परिक्रमा और क़ुरबानी की जाती है। इस इबादत के लिए साल का कोई विशेश समय निश्चित नहीं बल्कि यह साल में किसी भी समय एवं ऋतु में किया जा सकता है।

ग़ज़वा ए हुदैबिया में मुसलमानों की संख्या के संदर्भ में विभिन्न कथन मिलते हैं जिनमें यह संख्या एक हज़ार से लेकर सतरह सौ तक बयान की गई है। हुदैबियः की यात्रा में आप स. की पत्नी हज़रत उम्मे सलमा रज़ी. आप स. के साथ थीं। आप स. ज़ुलक़अदा के शुरू में सोमवार के दिन रवाना हुए और ज़ुलहलीफ़ा पहुँच कर वहां ज़ोहर की नमाज़ अदा की। फिर क़ुरबानी के जानवर मंगवाए, जिनकी संख्या सत्तर थी। उन्हें गानियाँ अर्थात मालाएं पहनाईं, फिर ऊंटों के कोहानों पर निशान लगाए। शेष जानवरों

पर एक सहाबी हज़रत नाजिया रज़ी ने निशान लगाए। इस यात्रा में मुसलमानों के पास दो सौ घोड़े थे।

नबी करीम सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़ुरैश के बारे में जानकारी लेने के लिए एक सूचना देने वाले को आगे भेजा तथा सावधानी के रूप में बीस सवारों के एक दल को भी आगे भेजा। रोहा नामक स्थान पर पहुंच कर आप स. को सूचना मिली कि वहां मुशरिक लोग जमा हैं तथा वे अचानक हमला कर सकते हैं। इस सूचना के मिलने पर आप स. ने हज़रत अबू क़तादा अंसारी को सहाबियों की एक जमात के साथ रवाना किया।

इस यात्रा में लोग आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने जमा हो गए जबकि आप स. के सामने एक पानी का बर्तन था और उससे वज़ू कर रहे थे। आप स. ने पूछा कि क्या बात है? सहाबा रज़ी. ने निवेदन पूर्वक कहा कि आप स. के पास जो इस बर्तन में पानी है, इसके अतिरिक्त कोई पानी हम में से किसी के पास न पीने के लिए है और न वज़ू करने के लिए पानी है। आप स. ने यह सुनकर उस बर्तन में अपना हाथ डाला और उसी समय आप स. की उँगलियों में से पानी के फ़व्वारे फूटने लगे। हज़रत जाबिर रज़ी. कहते हैं कि हम ने वह पानी पिया और वज़ू किया और यदि हमारी संख्या एक लाख भी होती तो वह पानी हमारे लिए पर्याप्त हो जाता।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम चमत्कारों के हवाले से फ़र्माते हैं कि अल्लाह में लीन मनुष्य द्वारा कई बार ऐसी बातें प्रकट होती हैं जो मानव सामर्थ्य से बढ़ी हुई लगती हैं और इलाही शक्तियों का रंग अपने अन्दर रखती हैं। अनेक चमत्कार हैं जो केवल व्यक्तिगत रूप में आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दिखलाए तथा जिन के साथ कोई दुआ न थी।

क़ुरैश ने इस बात का ज्ञान होते हुए कि मुसलमान युद्ध की धारणा से नहीं बल्कि बैतुल्लाह के दर्शन का निश्चय लेकर मदीना से आ रहे हैं, फिर भी मुसलमानों को मक्का में रोकने का निश्चय किया। आँहुज़ूर सलल्लाहु अलैहि वसल्लम को सूचना मिली कि क़ुरैश ने युद्ध के लिए एक विशाल सेना तय्यार की है और वे आँहुज़ूर सलल्लाहु अलैहि वसल्लम को बैतुल्लाह से रोकने वाले हैं। यह सुनकर आप स. ने लोगों से विचार विमर्श किया तथा बैतुल्लाह की ओर अपनी यात्रा जारी रखी।

आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम जब हुदैबिया की घाटी में पहुंचे तो आप स. की क़सवा नामक ऊंटनी बैठ गई और प्रयास के बावजूद आगे न बढ़ी। लोगों ने कहा कि

क़सवा अड़ गई है। आँहुज़ूर सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़सवा अड़ी नहीं और न ही यह इसकी आदत है, बल्कि हाथियों को रकने वाली पवित्र ज़ात अर्थात अल्लाह तआला ने इसको रोक दिया है। अल्लाह की क़सम जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं, क़ुरैश जो भी मांगेंगे, जिसमें वे अल्लाह तआला की निशानियों की प्रतिष्ठा देखते हों, मैं उनको वह अवश्य दूंगा। उसके बाद आप स. ने ऊंटनी को डांटा तो वह खड़ी हो गई।

मुसलमानों ने हुदैबियः नामक स्थान पर जिस कम पानी वाले हौज़ पर पड़ाव किया था लोग उस हौज़ से पानी लेने लग गए, यहाँ तक कि थोड़ी ही देर में वह सूख गया। हज़रत नाजिया रज़ी. बयान करते हैं पानी की तंगी की शिकायत पर आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे बुलाया और अपने तरकश से एक तीर निकाल कर मुझे दिया, फिर चश्मे का पानी एक डोल में मंगवाया। आप स. ने वज़ू फ़रमाया तथा कुल्ली करके डोल में डाल दी, और फ़रमाया कि इसे उस चश्मे में डाल दो जिसका पानी सूख गया है और उसके पानी में तीर गाड़ दो, अतः मैंने ऐसा ही किया। अतएव क़सम है उस ज़ात की जिसने आप स. को हक़ के साथ भेजा है, मैं बड़ी कठिनाई से उस कुंड में से निकला, मुझे पानी ने चरों ओर से घेर लिया था और पानी ऐसे उबल रहा था जेसे देगची उबलती है, यहाँ तक कि पानी बुलंद होकर किनारों के बराबर हो गया। लोग उसके किनारों से पानी भरते थे, यहाँ तक कि उनमें से अन्तिम व्यक्ति ने भी अपनी प्यास बुझा ली।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने इस अवसर पर एक बारिश का भी वर्णन फ़रमाया है- फ़रमाते हैं, उसी रात बारिश भी हो गई, अतः जब फजर की नमाज़ के लिए आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए तो मैदान पानी से पूर्णतः भीगा हुआ था। आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबियों से मुस्कुराते हुए फ़रमाया- क्या तुम जानते हो इस बारिश के अवसर पर तुम्हारे ख़ुदा ने क्या इरशाद फ़रमाया है? सहाबियों ने आदत के अनुसार निवेदन किया कि ख़ुदा और उसका रसूल स. ही अधिक जानते हैं। आप स. ने फ़रमाया कि ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि मेरे बन्दों में से कुछ ने तो यह सुबह वास्तविक ईमान की हालत में की है, जबकि कुछ कुफ्र की हालत में पड़ कर डगमगा गए, क्यूंकि जिसने तो यह कहा कि हम पर ख़ुदा के फ़ज़ल और रहम के कारण वर्षा हुई है, वह तो ईमान पर रहा, और जिसने कहा कि यह बारिश अमुक अमुक तारे के प्रभाव से हुई है तो वह निःसन्देह चाँद और सूरज का तो मोमिन हो गया परन्तु ख़ुदा का उसने इंकार किया। इस कथन से जो तौहीद के धन से परिपूर्ण

है आप स. ने सहाबियों को यह पाठ सिखाया कि निश्चय ही ख़ुदा ने साधनों के साथ इस जगत को चलाने के लिए भिन्न भिन्न प्रकार के संसाधन बना रखे हैं और वर्षा इत्यादि के विषय में ग्रहों एवं नक्षत्रों के प्रभाव से इंकार नहीं। किन्तु वास्तविक तौहीद यह है कि बावजूद माध्यमिक साधनों के इंसान कि नज़र उस सार्वभौमिक अस्तित्व की ओर से निश्चिन्त न हो जो इस जगत के होने का मूल कारण है और जिसके बिना ये प्रत्यक्ष साधन एक कीड़े से अधिक मूल्य नहीं रखते।

हुज़ूरे अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- हुदैबियः के हवाले से कुछ और विवरण अभी शेष है, इंशाल्लाह आगे बयान होगा, इस समय मैं कुछ मृतकों का वर्णन करूंगा और नमाज़ के बाद जनाज़ा पढ़ाऊँगा।

पहला वर्णन अज़ीज़म शहरयार रकीन शहीद सुपुत्र मुहम्मद अब्दुल्लाह वहाब साहब आफ़ बंगला देश, 5 अगस्त को बंगला देश कि सरकार गिर जाने के बाद पूरे देश में उपद्रव हो गया तो अहमदिय्यत के विरोधियों ने इससे लाभ उठाते हुए अहमद नगर की जमाअत पर हमला कर दिया। विरोधी लोग अहमदियों के घर जलाते हुए जामिया अहमदिया और जलसागाह के ओर आए। वे यदपि जामिया अहमदिया में दाख़िल होने में सफल नहीं हो सके, किन्तु जलसागाह के पीछे की ओर ड्यूटी पर मौजूद ख़ुद्दाम को घेर लिया और उनपर वार करते रहे। इसके चलते अज़ीज़म शहरयार के सर पर भारी चोट आई और तीन महीने तक उपचार के बाद अंततः 8 नवम्बर को केवल सोलह वर्ष की आयु में अज़ीज़म शहीद हो गए, इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैही राजिऊन। अज़ीज़म वक्फ़ नौ की तहरीक में शामिल थे। परिजनों में वालिदैन के अतिरिक्त दादा, दादी तथा एक बहिन और दो भाई शामिल हैं।

दूसरा वर्णन मुकर्रम अब्दुल्लाह असद ओदा साहब आफ़ कबाबीर का है। मरहूम उच्च कोटि के लेखक थे। मरहूम अत्यंत निष्ठावान, आत्मसम्मान वाले तथा जमात के सच्चे सेवक थे। हुज़ूरे अनवर ने मृतकों की मगफ़िरत तथा दर्जात की बुलंदी के लिए दुआ की।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ
وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ
يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक- 9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब- 18001032131